शल्य चिकित्सा के प्रवर्तक - सुश्रुत

- डॉ. यतीश अग्रवाल

भारत की एक बहुत प्राचीन नगरी है – वाराणसी। गंगा की निर्मल धारा सहस्त्रो वर्षों से इसके आँचल में मचल-मचल कर बहती रही है। इस नगरी का अपना सैकड़ों वर्ष पुराना वैभवशाली इतिहास है। हमेशा से यह नगरी शिक्षा का बड़ा केन्द्र रही है। प्राचीनकाल में यह काशी राज्य की राजधानी थी।

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले की बात है। गंगा तट से थोड़ी दूर एक पाठशाला थी। वहाँ आयुर्वेद (जीवनदान देने वाली कला) की शिक्षा दी जाती थी। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ आते और शल्य-चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करते। इस पवित्र मंदिर के द्वार केवल उनके लिए खुले थे, जिनका मन मानव सेवा और प्रेम से ओतप्रोत होता था, जिनमें साधना और कठोर परिश्रम करने की लगन होती थी।

इस पाठशाला के आचार्य थे महर्षि सुश्रुत। शल्य चिकित्सक के रूप में उनका यश चारों दिशाओं में दूर-दूर तक फैला हुआ था। वे स्वयं काशी के राजा दिवोदास के शिष्य थे। दिवोदास को भगवान धन्वंतरी का अवतार कहा गया है।

सुश्रुत के प्रारंभिक जीवन के बारे में आज कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती। बस, इतना ही कहा जा सकता है कि उनके पिता का नाम विश्वामित्र था और उनका बाल्यकाल गंगा की पावन लहरों से खेलते हुए बीता था। बड़े होने पर उन्होंने काशी के राजा, महान चिकित्साशास्त्री दिवोदास की देखरेख में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की और वे अपने समय के अद्‌वितीय शल्य चिकित्सक हुए। अपने जीवनकाल में उन्होंने बहुत सी नई शल्य तकनीकें विकसित कीं, जो आगे चलकर बहुत से शल्य-चिकित्सकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। उनके द्वारा रचित चिकित्सा ग्रंथ 'सुश्रुत संहिता' एक महान ग्रंथ है। यह ग्रंथ इस तथ्य का जीवंत प्रमाण है कि प्राचीन भारत के चिकित्सक, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अपने समय से बहुत आगे थे।

सुश्रुत संहिता से हमें शल्य चिकित्सा की विशद् जानकारी मिलती है। इसमें कुल मिलाकर 120 अध्याय हैं और इन्हें छह भागों में बाँटा गया है – सूत्रस्थान, निदानस्थान, शरीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान और उत्तरस्थान।

इस ग्रंथ में शल्य चिकित्सा की विधियों और उसमें काम आने वाले यंत्रों तथा शस्त्रों के बारे में व्यापक जानकारी दी गई है। शरीर के किसी भाग में मवाद पड़ जाने पर चीरा लगाना आवश्यक होता है, यह महत्वपूर्ण तथ्य सुश्रुत से छिपा न था। उन्होंने इस बारे में स्पष्ट जानकारी दी है कि इस स्थिति में चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ। इसी तरह जब शरीर के कुछ अंग जलवृद्धि के कारण फूल जाएँ तो उनका जल सूई द्वारा कैसे खींच लेना चाहिए, यह विधि भी उपयुक्त रूप से बताई गई है। मूत्राशय की पथरी, भगंदर और बवासीर के ऑपरेशन और मोतियाबिंद की शल्यक्रिया के साथ-साथ, ज़रूरत पड़ने पर माँ के गर्भ में चीरा लगाकर शिशु को जन्म देने की शल्यक्रिया और दंतचिकित्सा तथा अस्थिचिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन भी 'सुश्रुत संहिता' में मिलता है। इसके अलावा काया शृंगार (प्लास्टिक सर्जरी) से जुड़े तरह-तरह के ऑपरेशन भी विस्तार से वर्णित हैं।

सुश्रुत संहिता में शल्य यंत्रों की संख्या 101 बताई गई है। इन यंत्रों को हिंस्र पशु तथा पक्षियों के मुँह के आकार के अनुसार नाम दिए गए हैं, जैसे – सिंहमुख (सिंह के मुख जैसा), गृध्रमुख (गिद्‌ध के मुँह जैसा), मक्रमुख (मगरमच्छ के मुँह जैसा) आदि। ये यंत्र आधुनिक शल्य यंत्रों से किसी भी तरह कम न थे। इनके साथ ही 20 और शल्य यंत्र भी वर्णित हैं। इनके नाम हैं – मंडलाग्र, करपत्र, मुद्रिका, बृहिमुख आदि। ये शल्य औजार प्रायः लौह धातु या चांदी से बनाए जाते थे। इन्हें इस ढंग से बनाया जाता था कि इनकी धार कभी कमजोर न पड़े और इनमें कभी जंग न लगे। उन्हें रखने के लिए खासतौर से लकड़ी के डिब्बे भी तैयार किए जाते थे।

टाँके लगाने के लिए त्वचा और विभिन्न ऊतकों की मोटाई और रचना को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के धागे भी विकसित किए गए थे। कुछ का आधार रेशम की डोर होती थी तो कुछ सूत से बनाए जाते थे। कुछ चमड़े से तैयार किए जाते थे तो कुछ घोड़ों के बालों से। इसी प्रकार कई किस्म की सूइयाँ भी उपयोग में लाई जाती थीं-कुछ मोटी, कुछ पतली, कुछ अधिक घुमाव लिए हुए, तो कुछ कम और कुछ बिलकुल सीधी।

उन दिनों तरह-तरह की रूई, रेशम और मलमल से बनी पट्टियों का भी प्रचलन था।

दुर्घटनाओं में अथवा अस्त्र-शस्त्र के वार से फट गई आँतो के दो किनारों को एक दूसरे से जोड़ने के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली थी। इसके लिए वे एक किस्म के चींटो का उपयोग किया करते थे। फटी हुई आँत के दो किनारों को साथ मिलाकर उस पर चींटे छोड़ दिए जाते । वे चींटे अपने दाँतों से उस पर चिपक जाते, जिससे फटी हुई आँत के दो किनारे आपस में सिल से जाते। जब चीटों का शेष भाग काटकर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस दिए जाते। कुछ ही दिनों में आँत का घाव भर जाता । साथ ही चीटों का सिर भी ऊतकों में अपने आप घुल-मिल जाता था। आजकल शल्य चिकित्सक शरीर के भीतरी अंगों के टाँके लगाने के लिए भेड़ की आँत से बनाए गए धागों का उपयोग करते हैं। उद्देश्य यह रहता है कि टाँके भीतर ही भीतर घुल जाएँ जिससे टाँके निकालने के लिए कम से कम शरीर का वह भाग दोबारा न खोलना पड़े।

सुश्रुत-संहिता में शल्यचिकित्सा के लगभग हर महत्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी गई है, जैसे ऑपरेशन के बाद क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए, रोगी का आहार कैसा होना चाहिए, घाव भर जाए इसके लिए कौन-कौन सी औषधियाँ देनी चाहिए आदि।

प्राचीन भारत के चिकित्सकों को औषधि विज्ञान के बारे में भी व्यापक जानकारी थी। उन्होंने बहुत सी जड़ी बूटियों की खोज की थी। साथ ही रसायन भी खोज निकाले थे। ये रोगी का दुख-दर्द दूर करने के काम आते थे।

शल्यक्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न हो, इसके लिए कुछ ऐसी सक्षम जड़ी-बूटियाँ भी खोज निकाली गई थीं जिनके देने से रोगी गहरी नींद में सो जाता था।

मानव शरीर के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वजनदार वस्तु के साथ बाँधकर किसी छोटी-सी नहर में डाल दिया जाता था। एक सप्ताह बाद जब बाहरी त्वचा और ऊतक फूल जाते, तब झाड़ियों और लताओं से बने बड़े-बड़े ब्रुशों द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था। इससे शरीर के आंतरिक अंगों की रचना स्पष्ट हो जाती थी।

सुश्रुत जितने बड़े शल्यचिकित्सक थे, उतने ही श्रेष्ठ गुरु भी थे। शल्यकला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल-फूल, पेड़-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाँचों और मलमल से बने मानव-पुतलों पर दिनोंदिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लंबा, कितना गहरा रखना है-इसका अभ्यास प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज जैसे फलों और सब्जियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और उसे भरने के लिए क्या-क्या तकनीक अपनाएँ इसका प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता, जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अंदाजा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डंडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती, जिसे शिष्य को सूई द्वारा बेधना पड़ता था। इसी तहर टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदरा चमड़ा, जिस पर से बाल न हटाए गए हों, उस पर खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पट्टी बाँधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लिया जाता था।

इस प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने के बाद ही शिष्य के प्रशिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता। अब उसे किसी कुशल शल्य चिकित्सक की देखरेख में रख दिया जाता था। वह तरह-तरह की शल्य क्रियाएँ देखता और उनसे सीखता जाता। फिर कुछ समय बाद जब वह पूरी तरह परिपक्व हो जाता, तब उसे गुरु की देखरेख में स्वयं ऑपरेशन करने की अनुमति दी जाती थी। इस तरह पूर्ण प्रशिक्षण और अनुभव पाकर ही वह पाठशाला से बाहर निकलता था।

सुश्रुत मूलत: शल्य चिकित्सक थे। किंतु उन्होंने क्षय रोग, कुष्ठ रोग, मधुमेह, हृदय रोग, एनजाइमा एवं विटामिन सी की कमी से होने वाले रोग स्कर्वी के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी दी।

ईसा से 600 वर्ष पूर्व और सन् 1000 ई. तक का समय भारतीय चिकित्सा विज्ञान के लिए स्वर्णिम युग था। अत्रेय, जीवक, चरक और वाग्भट्ट जैसे बहुत से यशस्वी चिकित्सा शास्त्रियों ने भारत की पावन भूमि पर जन्म लिया। काशी के साथ-साथ नालंदा और तक्षशिला के प्राचीन विश्वविद्यालय भी सैकड़ों वर्षों तक उच्चकोटि की शिक्षा के लिए विश्वविख्यात रहे। यहाँ दूर-दूर से शिक्षार्थी आते और चिकित्सा विज्ञान में निपुण होकर मानव कल्याण की प्रतिज्ञा लेते। चिकित्सा विज्ञान के कुछ इतिहासकारों का तो यह भी कहना है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति के बहुत से सिद्धांत प्राचीन भारतीय चिकित्सकों के विचारों पर ही आधारित हैं।

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. 'सुश्रुत संहिता' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. मानव शरीर के भीतरी अंगों की बनावट की जानकारी प्राप्त करने की सुश्रुतयुगीन पद्धति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. सुश्रुत संहिता के अनुसार शल्य चिकित्सा का प्रशिक्षण किस प्रकार दिया जाता था ?
4. सुश्रुत को शल्य चिकित्सा के अतिरिक्त अन्य किन रोगों की महत्वपूर्ण जानकारी थी ?
5. सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा की कौन-कौन सी विधियों का वर्णन किया गया है ?
6. महर्षि सुश्रुत के विषय में आप क्या जानते है ? विस्तार पूर्वक लिखिए।
7. भारतीय चिकित्सा विज्ञान का 'स्वर्णयुग' किसे कहा जाता है और क्यों ?

योग्यता विस्तार

1. हमारे देश में पाए जाने वाले औषधीय महत्व के पेड़-पौधों के नामों की सूची बनाइए।
2. नीम, आँवला, तुलसी, पुदीना, अदरक, हर्र, बहेड़ा आदि औषधीय पौधों के गुणों की जानकारी दादी माँ अथवा अन्य व्यक्ति से प्राप्तकर, सूची बनाइए।
3. हमारे देश में वर्तमान में चिकित्सा की कौन-कौन सी पद्धतियाँ प्रचलित हैं, जानकारी एकत्रित कीजिए।
4. औषधीय खेती हेतु सरकार द्वारा क्या-क्या प्रयास किए जा रहे हैं, जानकारी प्राप्त कीजिए।

शब्दार्थ

शल्य चिकित्सा=चीड़-फाड़ द्वारा उपचार। **प्रवर्तक**=आरंभ करने वाला। **ओत-प्रोत**= परिपूर्ण। **अद्वितीय** = जिसके समान दूसरा न हो। **तकनीक** = पद्धति। **ऊतक**=तन्तु। **रुग्ण** = अस्वस्थ। **विलक्षण** = अद्भुत। **मशक** = बकरी की खाल का बना थैला जो पानी ढोने के काम आता है।